377 P
H 62

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1272
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 377

891.431
M277D

श्री

दीन के आंसू ।

लेखक—

श्री कवि नत्थूलाल माहौर,
बज़ाज़ा बाज़ार, झांसी ।

प्रकाशकः—

पं० श्री भगवानदास जोशी.

प्रथम वार * १९३१. * १००० प्रतियां

RECEIVED
8 AUG 1931
DEPARTMENT

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 377
Date
GOVT. OF INDIA

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

दिन रात रुलावत है जितना उतना ही
रुलायेंगे दीन के आंसू ।
कल पाय रहा दिल आज जिते कल ही
कलपायेंगे दीन के आंसू ॥
इकबार सतायवे के बदले सत बार
सतायेंगे दीन के आंसू ।
कर ज़ुल्म तूं दीन बना हो चुका तुझे
दीन बनायेंगे दीन के आंसू ॥१॥

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

मग़रूर तेरा कर चूर ग़ुरूर ज़रूर
झरायेंगे दीन के आंसू ।
तलवार तमञ्चन तोपन के सब कोप
नसायेंगे दीन के आंसू ॥

दुख दैन कुशासन आसन को अब हेर
हिलायेंगे दीन के आंसू ।
अय ज़ालिम तोय जहां के तहां जल्दी
पहुँचायेंगे दीन के आँसू ॥२॥

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

अय पातकी घातकी बात तेरी प्रभू सौंहीं
सुनायेंगे दीन के आंसू ।
जस दण्ड दिये जो अदण्डियों को तस दण्ड
दिवायेंगे दीन के आंसू ॥
घर बण्ड पखण्ड अखण्ड प्रचण्ड घमण्ड
घटायेंगे दीन के आंसू ।
सब साज मुसाहबी साहिबी के धरा धूर
मिलायेंगे दीन के आंसू ॥३॥

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

सम चक्र चहूं से कुचक्र पै चरखा
चलायेंगे दीन के आंसू ।

कर ध्वश तेरे मुख मीलन के करषा
लगवायेंगे दीन के आंसू ॥
बद रङ्ग बनायँगे रङ्ग सभी निज रङ्ग
रङ्गायेंगे दीन के आंसू।
हथयार बिना गुन्हगार तुझे हर बार
हरायेंगे दीन के आंसू ॥४॥

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

तब कान्ति छटा की घटा को घटा सु छटा
छित छायेंगे दीन के आंसू।
यह याद रहे सैयाद तुझे बरबाद न
जायेंगे दीन के आंसू ॥
महि मात की गोद में आह भरे जितने
गिर जायेंगे दीन के आंसू।
उतने वर वीर जवाहर से पल में
प्रघटायेंगे दीन के आंसू ॥५॥

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

निज प्रेम प्रभा श्रत आंसुन से नित जे
अन्वांहगे दीन के आंसू ।
अपने मुक्तान कौ हार हिये उनके
पहरायेंगे दीन के आंसू ॥
घर वक्त बराबर बैरन से विजई
बनवायेंगे दीन के आंसू ।
धन धन्य कहायेंगे वे जग में जे सदां
अपनायेंगे दीन के आंसू ॥६॥

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

द्रुत दौरके देश के द्रोहिन को दिन दूने
दवायेंगे दीन के आंसू ।
धनहीन दुखी इस भारत का दुरभाग
भगायेंगे दीन के आंसू ॥

अघ मूल पिशाचिनी दासता के दुख दूर
दुराये गे दीन के आंसू ।
सरताजन के सरताजन में सरताज
कहाये ंगे दीन के आंसू ॥७॥

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

सुख सहित साज समाज सदां सब भांति
सजाये ंगे दीन के आंसू ।
रस वीर प्रवाह अवीरन के हिय मांह
बहांये ंगे दीन के आंसू ॥
नव जीवन ज्योति जवाहर सी जग मध्य
जगाये ंगे दीन के आंसू ।
तर जाये ंगे ते परतंत्रता से जो सुने ंगे
सुनाये ंगे दीन के आंसू ॥८॥

—॥*॥ सवैया ॥*॥—

कितना ही सताते रुलाते रहो कलपाते
रहो कर जुलम विकासू ।

निकलैगी न आह कभी मुख ते निकलै
तनसे प्रिय प्राण प्रकासू ॥
दिन चार की चांदनी है अब और कछू
करलै भुख भोग विलासू ।
कवि लाल कमाल दिखायेंगे पै पर व्यर्थ
न जायेंगे दीन के आंसू ॥६॥

बाबू भगवानदास गुप्त के प्रबन्ध से
बलवन्त प्रेस,—झांसीमें मुद्रित ।

पुस्तक मिलने का पता—

पं० भगवानदास जोशी,

मो० पारेश्वर, झांसी ।